International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 12, December 2022
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन

PRADEEP KUMAR
RESEARCH SCHOLAR, SUNRISE UNIVERSITY, ALWAR RAJASTHAN

DR. NEERAJ TIWARI
RESEARCH SUPERVISOR, SUNRISE UNIVERSITY, ALWAR RAJASTHAN

सारांश

महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा प्रणाली को "बेसिक शिक्षा" कहा जाता है। उन्होंने मुख्य रूप से मातृभाषा में शिक्षा का लक्ष्य रखा और बच्चों को कुशल और स्वतंत्र बनाने के लिए गतिविधि केंद्रित शिक्षा के लिए कहा। गांधीजी छोटे सहकारी और समुदाय में रहने वाले सभी मेहनती, स्वाभिमानी और उदार व्यक्तियों के आदर्श नागरिकों के साथ छोटे, आत्मनिर्भर समुदायों का निर्माण करना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि बच्चों के लिए शिक्षा के माध्यम के रूप में कुछ स्थानीय शिल्प बनाए जाएं ताकि वे अपने मन, शरीर और आत्मा को सामंजस्यपूर्ण तरीके से विकसित कर सकें और अपने भावी जीवन की जरूरतों को भी पूरा कर सकें। इस तरह के गांधीवादी शैक्षिक विचार विकास के लिए प्रासंगिक हैं और वर्तमान समस्याओं जैसे बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार और कई अन्य के समाधान प्रदान करते हैं। इस पत्र में गांधी के शैक्षिक विचारों पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द**-** महात्मा गांधी**,** शिक्षा दर्शन**,** शिक्षा प्रणाली**,** मातृभाषा**,** शिक्षा का लक्ष्य**,** शैक्षिक विचार

प्रस्तावना

मूल्य शिक्षा प्रदान करने का महत्व आज आवश्यक महसूस किया जाता है क्योंकि शिक्षा की वर्तमान प्रणाली व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में ज्यादा योगदान नहीं दे सकती है। मूल्योन्मुख शिक्षा का अर्थ केवल नैतिक विज्ञानों का प्रचार या विशेष धार्मिक सिद्धांतों का प्रचार करना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति और समाज दोनों के लिए कार्यात्मक माने जाने वाले मूल्यों का ज्ञान प्रदान कर रही है।

गांधी के दार्शनिक, धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण और कई समकालीन गांधीवादी दृष्टिकोण आज मानवीय मूल्यों और सामाजिक परिवर्तन की समझ के लिए प्रासंगिक हैं। शिक्षा नीति में गांधी के आदर्शों से हम उनके सत्य, अहिंसा, शांति और प्रेम के विचारों से पूरे विश्व को प्रेरित कर सकेंगे।

गांधी अक्सर जोर देकर कहते थे कि व्यापक निरक्षरता एक अभिशाप है जो किसी राष्ट्र के विकास को बाधित करता है। उन्होंने लिखा: "मैं भारत के लिए मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के सिद्धांत में दृढ़ विश्वास रखता हूं"। गांधी का मानना था कि शिक्षा से न केवल ज्ञान में वृद्धि होनी चाहिए बल्कि दिल और हाथ में संस्कृति का भी विकास होना चाहिए। गांधी की एक और रुचि चरित्र निर्माण में थी। चरित्र निर्माण के बिना शिक्षा उनके अनुसार शिक्षा नहीं थी। वे एक मजबूत चरित्र को एक अच्छे नागरिक का आधार मानते थे। इस लिए एक ओर मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण के मुद्दे और दूसरी ओर विज्ञान और प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने के मुद्दों को साथ-साथ चलना होगा।

इस लिए, हमें समकालीन स्थिति में, विज्ञान का संतुलित मूल्यांकन करना होगा क्योंकि इसकी प्रगति को मूल्य शिक्षा की दिशा निर्धारित करने में एक बड़ी भूमिका निभानी है।

सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए हमें शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्यों को दिशा देनी होगी। सत्य और अहिंसा मानवीय मूल्यों को उत्पन्न कर सकते हैं। अहिंसा के महत्व की घोषणा करते हुए, उन्होंने कहा:

"अहिंसा मेरे विश्वास का पहला लेख है। यह मेरे ईख का अंतिम लेख भी है।"[1] उन्होंने आगे कहा: "अहिंसा के बिना सत्य, अहिंसा और अहिंसा की खोज और खोज करना संभव नहीं है।" सच्चाई आपस में इस कदर गुंथी हुई है कि उन्हें तोड़ना और अलग करना व्यावहारिक रूप से असंभव है। वे एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह हैं।"

सहयोग के माध्यम से शांति और सुरक्षा का विकास आधुनिक समाज की प्रगति और समृद्धि के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। यह संभव है क्योंकि मूल्य और सुधार आपस में जुड़े हुए हैं।

मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करने के अर्थ में मूल्य शिक्षा पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन मूल्यों का चयन करके महसूस करना और प्यार करना है जो हमारे देश की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक और सबसे उपयुक्त हैं। गांधी ने प्रेम, सहिष्णुता, सत्य, अहिंसा और मानवता की सेवा के अपने आदर्शों के माध्यम से हममें एक आशा का संचार किया जो आज भी उनके समय से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं और वे हमारे समाज पर स्थायी प्रभाव डालते रहेंगे।

यह कहा जा सकता है कि गांधी द्वारा परिकल्पित एक आदर्श सभ्यता की नींव सत्य और अहिंसा पर आधारित थी जो अभिन्न रूप से संबंधित साधन और साध्य थे। वे किसी भी समाज के लिए केंद्रीय मूल्य हैं क्योंकि सामाजिक, राजनीतिक और साथ ही आर्थिक क्षेत्रों में सभी मानवीय संबंध किसी न किसी रूप में उनसे प्रभावित होते हैं। वे हमारे समाज के मानक और लक्ष्य हैं। ये एक अधिक शांतिपूर्ण और सुखी विश्व व्यवस्था की नींव भी बन सकते हैं जो आज मानव जाति की अत्यंत आवश्यकता है।

शिक्षा का स्वरूप:-

वास्तविक अर्थ में शिक्षा की शुरुआत औपचारिक संस्थाओं से नहीं होती I. इ। स्कूल लेकिन घर पर परिवार के सदस्यों द्वारा चरण दर चरण शुरू होता है, और उसकी मृत्यु पर ही समाप्त होता है यह एक आजीवन प्रक्रिया है। एक उत्पाद के रूप में शिक्षा, यह ज्ञान और विचारों का एक स्रोत है जिसे संशोधित और परिष्कृत रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पारित किया जा सकता है। चूँकि समाज हमेशा प्रकृति में गतिशील होता है, शिक्षा लोगों को उन मूल्यों को बढ़ावा देती है, जिन्हें एक विशेष समय में मूल्यवान संस्थाओं के रूप में स्वीकार किया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन दिनों वैज्ञानिक दृष्टिकोण जिज्ञासा की भावना और सहयोग की आदत को वांछनीय मूल्यों के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसलिए लोगों के मन में इन मूल्यों को बिठाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है।

शिक्षा एक दिशा के रूप में, यह व्यक्ति को शिशु असंगठित, अनौपचारिक व्यवहार से वयस्क, संगठित औपचारिक और संरचित व्यवहार में ढालती है।

प्रारंभ में, शुरुआती दिनों में बच्चा अनसीखी प्रतिक्रियाओं, प्राकृतिक प्रवृत्तियों, आवेगों, आग्रहों और ड्राइव के साथ होगा। इन प्राकृतिक आवेगों को अगर अनियंत्रित और अनियंत्रित छोड़ दिया जाए तो जीवन का एक बर्बर तरीका बन जाएगा। उसका जीवन अव्यवस्थित और असंगठित होगा। जीवन व्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण और सिद्धांतपूर्ण तभी होगा जब यह किसी नियमन या नियंत्रण के अधीन होगा। यह शिक्षा है, जब बच्चे के आदिम आवेगों के शोधन के लिए दिशा दे सकती है 2

शिक्षा एक साधन के रूप में और साथ ही ज्ञान के प्रेम के रूप में दर्शन की परिभाषा के संबंध में ज्ञान का अंत। फ्रांसिस बेकन, एक महान दार्शनिक और विचारक ने कहा वह ज्ञान शक्ति है और इसलिए आसपास के ब्रह्मांड का ज्ञान समाज की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। एक अन्य यूनानी

दार्शनिक ने कहा है कि, ज्ञान सद्गुण और न्यायपूर्ण है। यहां तक कि भगवान कृष्ण ने भी भागवत गीता में ज्ञान को स्थितिप्रज्ञ, व्यक्ति समभाव, संतुलन और मानसिक संतुलन की योग्यताओं में से एक के रूप में निर्धारित किया है। इसलिए, ज्ञान के अर्जन के रूप में शिक्षा की अवधारणा शिक्षा के इतिहास की शुरुआत से लेकर हाल के समय तक प्रचलित थी। आम जनता के मन में अब भी ऐसा अर्थ प्रचलित है।

अतः शिक्षा अपनी प्रक्रियाओं द्वारा व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व को ढालती है और उसे सामाजिक और आर्थिक रूप से उपयोगी बनाती है। कहा जाता है कि मनुष्य स्वभाव से पशु है और संस्कृति से वह मनुष्य बनता है। शिक्षा मनुष्य को सुसंस्कृत और सभ्य बनाती है। शिक्षा एक शक्तिशाली मशाल है जो मनुष्य की अज्ञानता के अंधेरे रसातल को प्रकाश की गहरी मर्मज्ञ दौड़ से प्रकाशित करती है।

प्राचीन भारत में सर्वप्रथम जिस शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ, उसे वैदिक शिक्षा प्रणाली के नाम से जाना जाता है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा की प्राचीन प्रणाली वेदों पर आधारित थी और इसलिए इसे वैदिक शिक्षा प्रणाली का नाम दिया गया था। कुछ विद्वानों ने वैदिक शैक्षिक काल को ऋग्वेद काल, ब्राह्मण काल, उपनिषद काल, सूत्र (भजन) काल, स्मृति काल, आदि में विभाजित किया है, लेकिन इन सभी काल में वेदों की प्रधानता के कारण, लक्ष्यों और उद्देश्यों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। शिक्षा के आदर्श। इसीलिए इन काल की शिक्षा का अध्ययन वैदिक काल के अंतर्गत किया जाता है।

वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली में अद्वितीय विशेषताएं और गुण हैं जो दुनिया के किसी अन्य देश की प्राचीन शिक्षा प्रणाली में नहीं पाए गए। डॉ. एफ. ई. की के अनुसार, अपने उद्देश्य को प्राप्त

करने के लिए ब्राह्मणों ने न केवल शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली विकसित की, जो साम्राज्यों के टूटने और समाज के परिवर्तनों की घटनाओं में भी जीवित रही

वैदिक युग में शिक्षा का समाज में बहुत प्रमुख स्थान था। इसे समाज के लिए पवित्र और महत्वपूर्ण माना जा रहा था।

आर्यों की दृष्टि में शिक्षा ही भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास के क्षेत्र में समृद्धि प्राप्त करने का एकमात्र साधन थी। सुसंस्कृत बनने के लिए शिक्षा सभी के लिए आवश्यक थी। शिक्षा के अभाव में लोगों को असंस्कृत और पशु समान समझा जाता था। शिक्षा हमें नए रास्ते और ज्ञान दिखाने का एक साधन थी। शिक्षा हमारे छिपे हुए गुणों को खोलती है और लोगों को मोक्ष प्राप्त करने में मदद करती है। इसे मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा जा सकता है। शिक्षा से ही मनुष्य गुरु ऋण से मुक्त होता है और ऐसा ही उस समय लोगों की भावना थी। संक्षेप में अलग-अलग तर्क देकर हम कह सकते हैं कि शिक्षा उस काल के मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू थी। वैदिक काल में शिक्षा की विशेषता के लिए ज्ञान, जाग्रति, विनय, शील आदि शब्दों का प्रयोग प्राय: किया जाता था।

भारतीय संगीत जगत में गुरु का स्थान सबसे ऊँचा माना गया है जिसका वर्णन निम्न दोहे में किया गया है:

"गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो, महेश्वरः, गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मय श्री गुरुवेनामः ||"

गुरु शिष्य परम्परा सबसे प्राचीन रही है और श्रेष्ठ पद्धति के रूप में भी जानी जाती है। वेदकाल से संगीत की शिक्षा गुरु द्वारा मौखिक रूप से दी जाती रही है जिसे गुरुमुख कहा जाता है। विद्यार्थी गुरुकुल में रहते हुए गुरु की सेवा करता और साथ ही कड़े अनुशासन में रहकर संयमित जीवन व्यतीत करता तथा गुरु द्वारा दी गई शिक्षा का निरंतर अभ्यास करता और मन लगाकर सीखता ही एकमात्र उपाय था। ज्ञान प्राप्त करने के लिए। वैदिक युग से हमें संगीत शिक्षा का जो विवरण मिलता है, उससे पता चलता है कि किसी स्कूल को

कोई नाम नहीं दिया गया था या यहाँ तक कि प्रत्येक कक्षा में छात्रों की संख्या पर कोई बारी कयाँ नहीं थीं। पा सम के माध्यम से जो कुछ भी उपलब्ध है वे छिटपुट रूप से इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि संगीत और अन्य कला रूपों की शिक्षा व्यक्तिगत ध्यान देकर सिखाई जाती थी और इसे ठीक-ठीक गुरु-शिष्य परम्परा के रूप में परिभाषित किया गया है। इस प्रकार गुरुमुख द्वारा संगीत का ज्ञान प्रदान किया गया। लेकिन, बुद्ध काल के कला रूपों के संदर्भ में जो भी साहित्य या सामग्री उपलब्ध है, वहां से; विश्वविद्यालयों के कुछ नाम और सूचनाएं सामने आती हैं। भारतीय संगीत में योग्यता और विद्वतापूर्ण प्रतिबद्धता अतुलनीय है। इस संगीत के निरंतर विकास का श्रेय स्पष्ट रूप से गुरु-शिष्य परम्परा की प्रणाली को जाता है। गुरु ने कड़ी मेहनत, अभ्यास और प्रयोगों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान- यह सब छात्रों को दिया। बदले में उन्हीं सिद्धांतों के आधार पर समर्पित शिष्यों द्वारा अपने गुरु से सीखी गई हर चीज को सहेजा गया, पॉलिश किया गया और उसी का अभ्यास और प्रयोग किया गया जिससे वह विकसित और विकसित हुआ। विद्या के किसी भी रूप का सही ज्ञान प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका गुरु-मुख की एजेंसी द्वारा समझना होगा, इसलिए इसे 'गुरु-मुखी' ज्ञान प्राप्त करना कहा जाता है। यह एक निर्विवाद सत्य है कि संगीत का ज्ञान केवल गुरु के सीधे संपर्क से ही प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि संगीत एक व्यावहारिक विषय होने के कारण पुस्तकें और अंकन आदि अनावश्यक सिद्ध हुए थे। वस्तुतः प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा ने ही भारतीय संगीत को समृद्ध और सिद्ध बनाया है।

शिक्षा पर गांधीजी के विचार

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा उनके शिक्षा दर्शन का व्यावहारिक अवतार थी। बे सक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सभी लोगों के दिल और दिमाग को शुद्ध करना और इस प्रकाश में सभी प्रकार के शोषण और आक्रामकता से मुक्त समाज बनाना था। गांधीजी एक महान शिक्षाशास्त्री थे; उन्होंने अपनी शिक्षा की योजना को बुनियादी कहा क्योंकि यह जीवन जीने की कला के लिए है। उन्होंने शिक्षा प्रणाली को व्यावहारिक अर्थों की ओर

उन्मुख करने का प्रयास किया। उन्होंने बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत को प्रतिपादित किया जिसमें शैक्षिणक विषयों को कृषि, ग्रामीण उद्योग, बागवानी, पशुपालन और इसी तरह की उत्पादक गति विधियों के माध्यम से पढ़ाया जाना था। गांधीजी के अनुसार छात्रों को अपने विभिन्न शिक्षा विदों के साथ-साथ स्वावलम्बन, स्वावलंबन और श्रम की गरिमा के सिद्धांत को सीखना चाहिए। उनकी इच्छा थी कि शिक्षा का माध्यम व्यावहारिक जीवन में रचनात्मक होना चाहिए न कि पाठ्य-पुस्तकों में। हस्त शिल्प में शिक्षा श्रम की गरिमा सिखाती है और सीखने और करने को जोड़ती है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा शरीर, मन और आत्मा का एक सामंजस्यपूर्ण विकास था।

गांधीजी ने "बच्चे और आदमी, शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ का एक सर्वांगीण चित्रण" के रूप में परिभाषित किया। साक्षरता शिक्षा का अंत नहीं है और न ही इसकी शुरुआत भी। यह केवल एक साधन है जहां पुरुषों और महिलाओं को शिक्षित किया जा सकता है। साक्षरता अपने आप में कोई शिक्षा नहीं है, इसलिए मैं बच्चे की शिक्षा की शुरुआत उसे एक उपयोगी हस्तकला सिखाकर और प्रशिक्षण शुरू होने के क्षण से ही उत्पादन करने में सक्षम बनाकर करूंगा। जब किसी व्यक्ति के पास एक निश्चित मैनुअल प्रशिक्षण होता है, तो स्कूल छोड़ने के बाद बेरोजगारी का कोई सवाल ही नहीं उठता है। वह स्वयं को व्यस्त कर सकता है और शारीरिक श्रम करके अपनी आजीविका कमा सकता है, और शरीर मजबूत और स्वस्थ हो जाता है। यह स्वावलंबी शिक्षा युवा मन में सही दृष्टिकोण पैदा करती है। इसलिए, मस्तिष्क के सर्वांगीण विकास की उनकी अवधारणा तभी हो सकती है जब यह बच्चे के शारीरिक और आध्यात्मिक संकाय की शिक्षा के साथ एक ही वक़्त में पहले से हो। 4 वे एक व्यक्ति का संपूर्ण गठन करते हैं। गांधी ने चरित्र निर्माण नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा पर बहुत जोर दिया। उन्होंने कहा कि साहित्यिक प्रशिक्षण अपने आप में एक इंच भी नैतिक ऊंचाइयों को नहीं जोड़ता है और चरित्र निर्माण साक्षरता प्रशिक्षण से स्वतंत्र है। साक्षरता से अधिक महत्वपूर्ण चरित्र निर्माण है। गांधीजी ने जोर देकर कहा कि साक्षरता अपने आप में कोई शिक्षा नहीं है, लेकिन उन्होंने बौद्धिक उपलब्धि की गुणवत्ता को कम नहीं बताया, उन्होंने कहा कि मैं

मानता हूं कि बुद्धि की सच्ची शिक्षा केवल शारीरिक अंगों के उचित अभ्यास और प्रशिक्षण से ही आ सकती है। उदाहरण: हाथ, करतब, आंख, कान, नाक आदि। दूसरे शब्दों में, एक बच्चे में शारीरिक अंगों का एक बुद्धिमान उपयोग उसकी बुद्धि को विकसित करने का सबसे अच्छा और तेज तरीका प्रदान करता है।

गांधी ने एक बार कहा था: "शिक्षा का अर्थ है बच्चे और मनुष्य-शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ का सर्वांगीण चित्रण।" इस प्रकार, शिक्षा नैतिक, मानसिक और भावनात्मक सभी आयामों में व्यक्तित्व विकास का आधार बन जाती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि दीर्घकाल में शिक्षा वह नींव है जिस पर शांति और समृद्धि के महल खड़े किए जा सकते हैं। प्राचीन काल से ही "सा विद्या या विमुक्तये" कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि शिक्षा से हम अंत में मोक्ष प्राप्त करते हैं। संस्कृत के इस छोटे से मुहावरे में अनिवार्य रूप से मूल्य शिक्षा का विचार और सार निहित है जो सभी दृष्टिकोणों से प्रासंगिक है। यही अवधारणा, जब महात्मा गांधी के सरल लेकिन परिष्कृत दृष्टिकोण पर लागू की जाती है, तो हमें शैक्षिक विकास का एक नया आयाम प्रदान कर सकती है। इस प्रकार, महात्मा गांधी के विचारों का विश्लेषण करते हुए, हम उनके विचारों को दो मुख्य शीर्षकों के अंतर्गत जाँच सकते हैं: नैतिकता और नैतिकता।

नैतिक और नैतिक ज्ञान वह पहला बिंदु है जिस पर महात्मा गांधी की मूल्य शिक्षा की अवधारणा आधारित है। जिस भी शिक्षा व्यवस्था में इन दोनों का अभाव हो उसे अच्छा नहीं कहा जा सकता। इस तरह के विचार के पीछे कारण यह है कि बिना नैतिकता और नैतिकता के कोई भी छात्र सही अर्थों में मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं माना जा सकता है क्योंकि इसके लिए आत्मसंयम और अच्छे चरित्र की आवश्यकता होती है। एक व्यक्ति जो नैतिकतावादी नहीं है और जो सही और गलत के बीच अंतर नहीं करता है वह एक सच्चे छात्र के आवश्यक स्तर तक नहीं बढ़ सकता है। आध्यात्मिक विकास की प्राप्ति जिसे महात्मा गांधी ने शिक्षा का अनिवार्य अंग बताया है, वह नैतिकता और सदाचार से ही प्राप्त की जा सकती है। दूसरे दृष्टिकोण से देखने पर भी यही बात सिद्ध होती है, क्योंकि जब हम शिक्षा को मोक्ष प्राप्ति

का साधन मानते हैं और मुक्ति के मार्ग का सहारा भी मानते हैं तो उसे अध्यात्म से अलग नहीं कर सकते।

नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा

वैश्वीकरण के आधुनिक युग के लिए किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए नैतिक और आध्यात्मिक आधारित शिक्षा बहुत आवश्यक है। शब्द में एक प्रभावी मूल्यों पर निर्भर है। युवा पीढ़ी का सर्वांगीण विकास। जहां तक गुणवत्ता का सवाल है, शारीरिक और मानसिक, यानी आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की कुंजी है। फिर भी गांधीवादी दृष्टि के सरोकार के साथ प्रभावी शिक्षा में नैतिकता और आध्यात्मिकता की अवधारणा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस प्रकार इस पत्र का मुख्य जोर युवा पीढ़ी के विकास के लिए शिक्षा में मूल्यों के प्रभाव की रणनीतियों के विकास पर है। अध्ययन के लिए चुने गए विषय के कई आयाम हैं जो गांधीवादी अवधारणाओं द्वारा समर्थित प्रभावी शिक्षा को बढ़ाते हैं। यह अध्ययन विश्व शैक्षिक प्रौद्योगिकी के इस विकासात्मक चेहरे के लिए सामयिक होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण है जो सभी पहलुओं में शांति के माध्यम से वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए खुला है।

नैतिक मूल्यों और ज्ञान आधारित शिक्षा को युवा पीढ़ी की सफलता में योगदान कारक माना जाता है। अधिक से अधिक शिक्षाविद् प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करने के लिए युवा शक्ति की क्षमताओं को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। शिक्षा वृद्धि ने किसी भी महत्वपूर्ण परिणाम के लिए नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की सेवा और विकास में समानता पर आक्रमण किया है। युवा पीढ़ी के विकास के लिए नैतिक और आध्यात्मिक पहल के प्रभाव को गांधीवादी दृष्टि के साथ जोड़ना होगा। किसी व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक गुणों के प्रभाव के परीक्षण में युवा पीढ़ी पर प्रभावी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बेहतर युवा विकास प्रदर्शन और ये प्रथाएं अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति करती हैं या नहीं। इसके अलावा, जैसा कि युवा शिक्षा के क्षेत्र में गतिशीलता बढ़ रही है। नैतिकता और आध्यात्मिकता आधुनिक शिक्षा समाज का एक अनिवार्य घटक बनता जा रहा है। अब समय आ गया है कि इन मूल्यों को एक व्यक्तिगत सेवा और

विकासशील समाज के गुणात्मक उत्पादन में सुधार के लिए बनाए गए एक साधन के रूप में देखा जाए।

युवा पीढ़ी के लिए प्रभावी शिक्षा की दक्षता और प्रभावशीलता और नैतिक और आध्यात्मिक विकास द्वारा इसके बहुआयामी निवेश हमारे विकासशील देश के लिए मौलिक आवश्यकता को पूरा कर सकते हैं। युवा शक्ति विकास की प्राप्ति के लिए इन मूल्यों पर आधारित सिद्धांतों को प्रवाहित करना, युवा शक्ति संगठनात्मक उद्देश्यों के लिए गांधीवादी विचारों के माध्यम से प्राप्त करने के लिए गतिशीलता को प्राथमिक कार्य माना जाता है। यह प्रभावी शिक्षा की प्रक्रिया में नैतिकता और आध्यात्मिकता के शानदार विलय के माध्यम से ही संभव हो सकता है। इन मूल्यों को मन में बैठाना मानव पूर्णता की एक कला और विज्ञान है, जो युवा पीढ़ी के लिए प्रभावी शिक्षा और विकास के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण के माध्यम से इसके उपयोग पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

प्राथमिक शिक्षा पर गांधीजी के विचार:

शिक्षा शब्द को अनेक शिक्षाविदों ने परिभाषित किया है। लेकिन यहां मैं गांधीजी की शिक्षा की परिभाषा पर ध्यान देना चाहूंगा। उनके अनुसार शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वोत्तम गुणों से है। उन्होंने सभी पहलुओं में सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया। शिक्षा में गांधीजी का योगदान हमारे देश के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और समाज के सभी पहलुओं के विकास के लिए हमेशा प्रासंगिक है। इसलिए यह शोध कार्य गांधीजी के विचारों को मन में बैठाकर कर्नाटक की समकालीन शिक्षा प्रणाली पर प्रकाश डालता है।

शिक्षा के उद्देश्य:-

रोटी और मक्खन का उद्देश्य: रोटी और मक्खन का उद्देश्य उपयोगितावादी उद्देश्य को संदर्भित करता है जो एक तत्काल आवश्यकता है। गांधीजी ने शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया जो सीखते समय सीखने को प्रदान

करता है। यह प्रत्येक शिक्षार्थी के पास एक उपकरण होना चाहिए। वह भारत की गरीबी और बेरोजगारी को ध्यान में रखते हुए बेरोजगारी को दूर कर सकता/सकती है। गांधीजी ने शिक्षा के विषय के रूप में औद्योगिक प्रशिक्षण और हस्तकौशल और हस्तकला के विकास पर ध्यान केंद्रित किया और सुझाव दिया जो न केवल शिक्षार्थियों को उनकी कमाई और आत्मनिर्भरता की संतुष्टि देगा बल्कि यह बड़े पैमाने पर उनके परिवार और राष्ट्र के लिए एक संबल के रूप में भी साबित होगा।

सांस्कृतिक उद्देश्य :- गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का सांस्कृतिक पक्ष साक्षरता से अधिक महत्वपूर्ण है। संस्कृति वह आधार है, प्राथमिक वस्तु जो लड़कियों को यहां से प्राप्त करनी चाहिए। यह आपके आचरण और व्यक्तिगत व्यवहार के छोटे से छोटे विवरण को दर्शाता है कि कैसे बैठना है, कैसे चलना है, कैसे कपड़े पहनना है आदि। यह वह शिक्षा है जिसके माध्यम से छात्र या हर कोई देश-भारत की गौरवशाली संस्कृति, इसकी अविश्वसनीय कलाओं को सीखता है। धर्म और इतने पर। शिक्षा वह साधन है जो उन्हें हमारी महान संस्कृति से परिचित कराती है और यह सिखाना है कि वे कैसे अपनाते हैं और हमारी संस्कृति के मूल्यों का क्या महत्व है। इस प्रकार गांधीजी ने शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य पर बहुत जोर दिया और सिफारिश की कि गीता और रामायण को छात्रों को उनकी समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत से परिचित कराने के साधन के रूप में पढ़ाया जाए।

सामंजस्यपूर्ण विकास: - शिक्षा को तीनों स्तरों यानी 3RS- पढ़ना, लिखना और अंकगणित विकसित करना चाहिए। शिक्षा को यह महसूस करने में मदद करनी चाहिए कि क्या पढ़ाया जाता है और उसके साथ क्या होता है और यह व्यक्त करने के लिए कि वह क्या महसूस करता है और वह क्या करना चाहता है। इसलिए व्यक्ति के सभी संकायों का विकास किया जाना चाहिए। लिखने और पढ़ने से वह साक्षर बनेगा और अंकगणित से उसे दिन-प्रतिदिन के खर्चों की गणना करने में मदद मिलेगी और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह तार्किक सोच और चीजों का विश्लेषण करने में मदद करेगी।

नैतिक उद्देश्य:- शिक्षा व्यक्ति को सही और गलत के बारे में जागरूक करे। यह हमें मूल्यों और शिष्टाचारों में शामिल करता है और हमारे चरित्र को ढालता है। गांधीजी ने साक्षरता से अधिक चरित्र निर्माण पर ध्यान दिया। उनके अनुसार व्यक्तित्व का विकास बौद्धिक उपकरणों और शैक्षणिक ज्ञान के संचयन से अधिक महत्वपूर्ण था। और हम यह भी मानते थे कि एक शिक्षक को अहिंसा, सत्य और विचार, वचन और कर्म का महत्व सिखाया जाना चाहिए।20

सामाजिक एवं वैयक्तिक उद्देश्य :- गाँधीजी के शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक एवं वैयक्तिक दोनों है। वे व्यक्तिगत पूर्णता और सत्य और अहिंसा पर आधारित एक नई सामाजिक व्यवस्था चाहते थे। शिक्षा एक व्यक्ति को प्रशिक्षित करती है और उसे एक आदर्श नागरिक बनाती है जो अपने राष्ट्र की मदद करेगा। एक व्यक्ति आस-पास, संस्कृति, समाज आदि से बहुत कुछ सीखता है और वह एक साथ प्रगति करता है, समाज प्रगति करता है क्योंकि व्यक्तियों की वृद्धि और कुछ नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र की वृद्धि है।

अंतिम उद्देश्य:- आत्म-साक्षात्कार जीवन के साथ-साथ शिक्षा का भी अंतिम लक्ष्य है। शिक्षा के माध्यम से हर कोई अपने बारे में समझता है और सार्वभौमिक प्रश्न का उत्तर प्राप्त करता है कि मैं कौन हूँ? यह शिक्षा ही है जो उन्हें अपने अस्तित्व और उसके उद्देश्य को समझने में मदद करती है। यह आध्यात्मिक शिक्षा है जो ईश्वर का ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार प्रदान करती है। व्यक्ति अपनी क्षमता या क्षमताओं को पहचानते हैं और उन्हें शिक्षा के माध्यम से अपने राष्ट्र के आदर्श नागरिक साबित करते हैं। यह शिक्षा ही है जो उन्हें अध्यात्म और विभिन्न धर्मों से परिचित कराती है और अंत में प्रत्येक व्यक्ति को एहसास होता है कि वे क्या हैं? यह आत्म-साक्षात्कार है- शिक्षा का अंतिम उद्देश्य। गांधीजी के शब्दों में- सच्ची शिक्षा का परिणाम भौतिक शक्ति में नहीं बल्कि आध्यात्मिक शक्ति में होना चाहिए। उसे ईश्वर में मनुष्य के विश्वास को मजबूत करना चाहिए।

निष्कर्ष

गांधीजी ने अपनी शक्षा योजना को मूक सामाजिक क्रांति का नेतृत्व करने वाला माना और उम्मीद की क यह शहर और गांव के बीच एक स्वस्थ संबंध प्रदान करेगा, जो समाज के बीच जहरीले रिश्ते को खत्म करने में एक लंबा रास्ता तय करेगा। कक्षाएं। शक्षा के क्षेत्र में व भन्न अन्य वद्वानों और वचारकों द्वारा इस दृष्टिकोण की पुष्टि की गई थी। इस शोध का उद्देश्य गांधीवादी दृष्टिकोण से प्राथ मक वद्यालयों में शक्षा के मूल्यों को समझने के अपने मौ लक उद्देश्य को व्यक्त करता है। अ धक वशेष रूप से, हमारा उद्देश्य था: आजकल प्राथ मक शक्षा शक्षा प्रणाली में बहुत बदलाव और संशोधन है। प्राथ मक स्तर पर गांधीवादी दृष्टि से शक्षा के लए यह भाग बहुत आवश्यक है। वर्तमान शक्षा प्रणाली केवल छात्रों के लए ज्ञान/सूचना प्राप्त करने के लए है। शक्षा की गुणवत्ता में सुधार और गुणवत्ता के लए छात्रों की नौकरी कौशल उन्मुख गांधीवादी शक्षा प्रणाली के लए अध्ययन का उपयोग। प्राथ मक शक्षा पर समसामयिक गांधीवादी दृष्टिकोण से नैतिकता और आध्यात्मिकता में सुधार केवल व्यक्ति के बाहरी परिवर्तन के लए नहीं है। यह एक व्यक्ति को भीतर से बदल सकता है जिसे इन मूल्यों की पूरी प्र क्रया को प्रतिबिंबित करना होगा। यह एक प्रभावी शक्षा में एक व्यक्ति का शोधन है। ये शोधन कुशल और प्रभावी उत्पादन स्तर प्राप्त करने के लए मौजूदा शक्षा प्रणाली में व्यक्तिगत गति व धयों को बदल सकते हैं। युवा पीढ़ी के वकास में आध्यात्मिकता और नैतिकता का अनुप्रयोग अपरिहार्य है। यह अवसाद हिंसा की समस्या का समाधान करता है, व्यवस्था में निराश करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अग्रवाल, डी.के., एस.के. उपाध्याय, ए.एम त्रिपाठ और के.एन अग्रवाल (1987): न्यूट्रीशनल स्टेटस, फजिकल वर्क कैपे सटी एंड मेंटल फंक्शन इन स्कूल चल्ड्रन - साइंटि फक रिपोर्ट 6 न्यूट्रिशन फाउंडेशन ऑफ इं डया, नई दिल्ली।
- अग्रवाल, यश और सबोन, सारिका (1994): एजुकेटिंग शेड्यूल्ड कास्ट्स - नई दिल्ली

एनआईईपीए अहमद, इफ्तिखार (1999): 'गेटिंग रिड ऑफ चाइल्ड लेबर' - इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम **XXXIV,** नंबर 27।

- अरुण। सी. मेहता (1994): एजुकेशन फॉर ऑल एनरोलमेंट प्रोजेक्ट इन इंडिया जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन वॉल्यूम नंबर **VIII,** जनवरी।
- बैरप्पा.के. (2007)। सामाजिक अनुसंधान के तरीके और तकनीक। चेतन बुक हाउस। मैसूर।
- बसु, अपर्णा (1974): भारत में शिक्षा और राजनीतिक विकास का विकास 1898-1920 - दिल्ली; ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस वार्षिक रिपोर्ट 2007-08 - शिक्षा विभाग, जीओके।
- बीकर एस, गैरी (1996): साक्षरता और अधिकारिता - नई दिल्ली सेज प्रकाशन।
- बेहरमन, जेरे आर और बारबरा, एल वोल्फ (1983): विकासशील देश में स्कूली शिक्षा का सामाजिक आर्थिक प्रभाव - अर्थशास्त्र और सांख्यिकी की समीक्षा 66।
- बॉन, विन्फ्राइड (1983) "स्कूल और शिक्षा - एक समस्या संबंध" - शिक्षा खंड 31
- ब्राटिया एम जीएनवी (2003): एपी, कर्नाटक, उड़ीसा, तमिलनाडु, केरल और गुजरात राज्यों में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का मूल्यांकन - भारत में स्कूलों में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम में एक कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया पेपर न्यूट्रीशनल द्वारा बातचीत फाउंडेशन ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
- डी.जगन्नाथ राव (2009): कर्नाटक में शिक्षा की प्रगति का व्यापक अध्ययन - यूबीएसपीडी
- डी के लाल दास। (2008)। सामाजिक अनुसंधान करना: शोध प्रबंध तैयार करने के लिए एक स्रोत पुस्तक। कल्पाज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- शिक्षा विभाग (2004): सर्व शिक्षा अभियान - मानव संसाधन विकास मंत्रालय। सरकार। ऑफ इंडिया नई दिल्ली।
- डॉ. बी.जी. राधाकृष्ण (1989): गांधीवादी आर्थिक विचार - एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण -

प्रसारंगा मनसा गंगोत्री मैसूर।

- गोविंदा आर (2004): इंडिया एजुकेशन रिपोर्ट - ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली मानव संसाधन विकास मंत्रालय और राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (2000) - एजुकेशन फॉर ऑल इंडिया, नई दिल्ली।
- गुप्ता.एस.पी. (1992) एलिमेंट्री स्टैटिकल मेथड्स। सुथनचंद एंड संस नई दिल्ली।
- अंजनेयुलु, बी.एस.आर. (2003)। गांधीजी का 'हिंदू स्वराज' - स्वराज, स्वदेशी मार्ग। द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 33-44।
- एलेन, डी. (2007)। हिंसा और शांति शिक्षा पर महात्मा गांधीजी। फिलॉसफी ईस्ट एंड वेस्ट, 290-310।
- अकेला, डी. (2009)। सत्याग्रह: संघर्ष प्रबंधन का गांधीवादी दर्शन। जर्नल ऑफ़ वर्कप्लेस राइट्स, 14(4).
- बाला, एस. (2005)। शिक्षा की गांधीवादी अवधारणा-वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता। द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 531-548।
- बावा, आर. (2009)। गांधीवादी आर्थिक विचार और इसकी समकालीन प्रासंगिकता। महात्मा गांधीजी का अर्थशास्त्र: चुनौतियां और विकास, 150, नई दिल्ली।
- बावा, जे., और बेदी, एच.एस. (2017)। संघर्ष समाधान और आगे की राह के गांधीवादी दर्शन का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण। मानविकी और सामाजिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (आईजेएचएसएस), 6(6), 15-28।